अब्दुल–बहा के स्वर्गारोहण के शताब्दी स्मरणोत्सव के अवसर पर

विश्व न्याय मंदिर द्वारा एक श्रद्धांजलि

अब्दुल–बहा की महान चेतना को अपने शाश्वत गृह में आरोहण किए हुए अब एक शताब्दी बीत चुकी है। उनके जन्म का संयोग धर्म के शौर्य काल के भोर के साथ हुआ था, और उनके निधन ने इसके अंतिम कालखंड पर सूर्य के अवरोहण को इंगित कर दिया। उन्होने किस प्रकार एकता की ताकतों को मूर्त रूप दिया, इसका स्पष्ट प्रमाण उनके अंतिम संस्कार के दृश्य से अलग कल्पित भी नहीं किया जा सकता, जब इस भूमि पर हर पंथ के जनों का विशाल जनसमुदाय अपनी साझा क्षति का शोक मनाने के लिए एक साथ एकत्र हुआ। उनके दिनों में, धर्म को अपनाने वाले अनेक मित्रों ने केवल उनका अवलोकन करके दैवीय शिक्षाओं की चेतना को आत्मसात कर लिया था; आज भी, यदि हम अपने जीवन को उसी चेतना के साथ संरेखण करना चाहते हैं, तो हम मास्टर द्वारा स्थापित उदाहरण की ओर देखते हैं, जिनके वचन और कर्म में बहाउल्लाह के प्रकटीकरण से दमकने वाले प्रकाश की चमक परिलक्षित होती है।

उनका उदाहरण, हर दृष्टि से, बहाई पहचान के केंद्र में है। अपने संपर्क में आने वाले लोगों में आध्यात्मिक संवेदनशीलता बढ़ाने की चाहत में प्रत्येक बहाई बेहतर ढंग से यह समझने के लिए उनकी ओर मुड़ सकता है कि धर्म के प्रकाश को कैसे फैलाया जाए और एक उदाहरण का अनुसरण कैसे किया जाए। उनकी अपनी सलाह, कि शिक्षक को "पूर्णतया प्रदीप्त" होना चाहिए जिससे उसकी वाणी "प्रभावित कर सके", परंतु "पूरी तरह से स्वहीन और पार्श्व" में रहे ताकि वह उच्च लोक के सहचरों के स्वर–माधुर्य के साथ शिक्षण कर सके, यह अब्दुल बहा के संपर्क में आने से रूपांतरित हो जाने वाली अनगिनत आत्माओं में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अनगिनत सबक सीखे जा सकते हैं कि कैसे उन्होंने हर प्रकार के व्यक्ति को, लगातार एकता के वृत्त को विस्तार देते हुए, रूप रंग, भाषा, प्रथा या विश्वास की किसी भी बाह्य भिन्नता की परवाह किए बिना दिव्य शिक्षाएँ प्रस्तुत कीं। उनके प्रेम की सार्वभौमिकता ने एक ऐसे समुदाय का निर्माण किया, जो उस समय भी, समाज का एक प्रतिनिधिक अंश होने का दावा कर सकता था। उनके प्यार ने पुनर्जीवित, पोषित, प्रेरित किया; मनमुटाव को परे किया और सभी का ईश्वर के प्रीतिभोज में स्वागत किया। आज सामुदायिक–निर्माण का किया गया प्रत्येक प्रयास, प्रत्येक शैक्षिक गतिविधि और प्रत्येक शिक्षण पहल, हमारे अपने प्रयासों के माध्यम से उसी प्रेम के अंश को, जो उन्होंने प्रत्येक आत्मा पर बरसाया, संचार करने की आशा रखता है। इस तरह के प्रयास ही सबसे अच्छी श्रद्धांजलि हैं जो उन्हें इस शताब्दी वर्ष पर और उसके बाद आने वाले हर दिन दी जा सकती है।

हम बहाउल्लाह को धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने विश्व को न केवल अपनी शिक्षाओं में, पवित्रता, भक्ति और सत्यनिष्ठा का एक मानक दिया, जिसको प्राप्त करने की आकांक्षा आत्माएं सदैव कर सकती हैं, बल्कि, मास्टर के रूप में, एक दोषरहित उदाहरण भी दिया कि इस स्तर का जीवन कैसे जिया जा सकता है। मानवता जैसे–जैसे संकट–दर–संकट से घिरती जा रही है, महानतम नाम का समुदाय, जो इस तरह की उथल–पुथल के जोखिम से अलग नहीं रह सकता, अपने सामने 'अब्दुल–बहा' का आदर्श उपलब्ध होने से विशेषाधिकृत है। न तो जोखिम और न ही बाधायेँ, उन्हें अपने मिशन को पूरा करने से रोक सकीं, चाहे समय की जरूरतों को पूरा करना हो या भविष्य की तैयारी करनी हो; न तो विपरीत परिस्थितियाँ और न ही संसार की घटनाएँ उन्हें अपने मार्ग से विचलित कर सकीं। शांत, आत्मविश्वासी और दृढ़ निश्चयी, ईश्वर के मार्ग में कठिनाइयों और प्रतिकूलताओं का स्वागत करते, वह गतिरोधों से विचलित नहीं हुए। कितने निरंतर थे उन पर किए जा रहे आक्रमण! कितने दर्द भरे थे उनके द्वारा

उठाए गए बोझ! हम उनकी सम्मानित बहन, महानतम पाती के शब्दप्रमाणों को याद करते हैं, कि "रात के अंधेरे में, उनके वक्ष की गहराई से, उनकी आहों को सुना जा सकता था, और जब दिन प्रारम्भ होता था, तो उनकी प्रार्थनाओं का चमत्कारिक संगीत उच्च नगर के निवासियों तक आरोहण करता था।"

समय बीतने से उस विस्मय में कमी नहीं आई है जिसके साथ हम "उन की भूमिका और व्यक्तित्व को देखते हैं, जो केवल बहाउल्लाह के धर्मकाल में ही नहीं बल्कि धार्मिक इतिहास के पूरे क्षेत्र में एक अद्वितीय कार्य को पूरा करता है।" और जैसा कि शोगी एफेंदी ने आगे पुष्टि की हैः

> वह हैं, और सदैव ही माने जाने चाहिए, सर्वप्रथम, बहाउल्लाह की अद्वितीय और सर्वव्यापी संविदा के केंद्र और धुरी, उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति, उनके प्रकाश का निष्कलंक दर्पण, उनकी शिक्षाओं का परिपूर्ण उदाहरण, उनके शब्दों का त्रुटिहीन व्याख्याकार, प्रत्येक बहाई आदर्श का उदाहरण, हर बहाई सद्गुण का अवतार, प्राचीन मूल से निकली परम शक्तिशाली शाखा, ईश्वर के कानून का अंग, "जिसके चारों ओर सभी नाम परिक्रमा करते हैं", मानवता की एकता का मुख्य स्रोत, सर्व महान शांति का प्रतीक, इस सर्वाधिक पवित्र धर्म व्यवस्था की केंद्रीय कक्षा का चंद्रमा – निहित शैलियाँ और उपाधियाँ अपनी सर्वाधिक सच्ची, अपनी सर्वोच्च और निष्पक्ष अभिव्यक्ति इस जादुई नाम अब्दुल–बहा में पाती हैं। वह, इन उपाधियों से उच्च और परे, "ईश्वर का रहस्य" हैं – एक अभिव्यक्ति, जिसके द्वारा बहाउल्लाह ने स्वयं उन्हें नामित किया है, और जो किसी भी तरह से हमें उन्हें अवतार का स्थान देने के लिए आधार तो नहीं देता, पर इंगित करता है कि किस प्रकार अब्दुल बहा के रूप में मानव स्वभाव तथा महामानवीय ज्ञान की असंगत विशेषताएँ एवं परिपूर्णता मिश्रित तथा पूर्णतया समायोजित किए गए हैं।

प्रिय सहकर्मियोंः हमने आपको न केवल अब्दुल बहा की स्मृति का सम्मान करने और उनकी परीक्षाओं और विजयों को याद करने, बल्कि, हमारे साथ, अपने आप को और उन समुदायों को भी जिनका आप प्रतिनिधित्व करते हैं, ईमानदारी से उस धर्म की सेवा करने के लिए, जिसके लिए उन्होंने अपना अस्तित्व ही न्योछावर कर दिया, पुनः समर्पित करने के लिए बुलाया है। आशीर्वादित सौंदर्य द्वारा उनको सौंपे गए पवित्र कार्यभार को पूरा करने के लिए, उन्होंने बहाई विश्व को दो अधिकार पत्र सौंपे, जो तभी से इसकी प्रगति और विकास को निर्देशित कर रहे हैं। एक थी उनकी दिव्य योजना की पातियाँ, जिसके माध्यम से हर देश में ईश्वर का शब्द प्रख्यापित हुआ है; दूसरा था उनका इच्छापत्र और वसीयतनामा, जिसने प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना के लिए एक प्रक्रिया को गति प्रदान की। अब, रचनात्मक युग की पहली शताब्दी के अंत में, और वैश्विक योजनाओं की एक नई श्रृंखला के प्रारम्भ में, मास्टर की ईश्वरीय योजना की त्वरित प्रगति स्पष्ट दिखाई दे रही है। अंतर्राष्ट्रीय से लेकर स्थानीय स्तर तक संस्थाओं और एजेंसियों के विशाल समूह के अस्तित्व से पिछले सौ वर्षों में प्रशासनिक व्यवस्था का जैविक विकास प्रदर्शित होता है, जो आस्था की चेतना को प्रणालित और विश्वव्यापी बहाई समुदाय के प्रयासों का मार्गदर्शन और अवलंबन करती है। वह संविदा जिसका केंद्र 'अब्दुल बहा' थे, एक अभेद्य गढ़ बनी हुई है। हम इस बात से आनंदित होते हैं कि कैसे संविदा प्रत्येक अनुयायी को एक साझा मिशन की ओर उन्मुख करती है, एक गतिशील एकता बनाए रखती है जो विश्वासियों के निरंतर बढ़ते समुदाय को विकसित करती है।

मास्टर के व्यक्तित्व का चिंतन करते हुए, हम अपने आप को आश्चर्य चकित पाते हैं, उस सर्वव्यापी प्राधिकार से जो उनके अटूट धैर्य और समझ के साथ था, प्रत्येक स्थिति में उनकी बुद्धिमत्ता की तीक्ष्णता से, उनके अस्तित्व की अनंत कोमलता और उनके असीम प्रेम से जिसे हर मुक्त आत्मा द्वारा महसूस किया जा सकता है। लेकिन उनके अतुलनीय गुणों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए हर प्रेरणा उस स्मरण से बाधित होती है कि उन्होंने कभी प्रशंसा या सांसारिक मान्यता नहीं मांगी। और इसलिए हम साक्षी देने के लिए मजबूर महसूस करते हैंः हम सभी के हृदयों के प्रिय, अब्दुल बहा, आपका सब कुछ सेवा भाव ही था– एक सेवा भाव "पूर्ण, शुद्ध और वास्तविक, दृढ़ता से स्थापित, स्थायी, प्रत्यक्ष, स्पष्ट रूप से प्रकट और किसी भी प्रकार की व्याख्या के अधीन नहीं" हम आपके प्रति

निष्ठा की प्रतिज्ञा के लिए, उस संविदा जिसे आपने "उदघोषित, संरक्षित और सिद्ध किया", को बनाए रखने की हमारी प्रतिज्ञा के लिए, आपके कालातीत मार्गदर्शन और व्याख्याओं के प्रति निष्ठा की हमारी हार्दिक अभिव्यक्ति के लिए, आपके उत्कट निवेदनों और प्रभोदनों के लिए उपलब्ध शब्दों को आरक्षित रखते हैं। यही प्रतिज्ञा इस समय सौंपे गए मिशन को पूरा करने के लिए बहाई जगत के दृढ़, कठिन परिश्रम में प्रकट होती है। इस समुदाय को आपके उदाहरण के अनुसार जीने का प्रयास करते हुए देखना हमारे लिए आपके इन शब्दों का आह्वान करता है:

> हे मित्रों! ईश्वर की स्तुति हो कि हर देश में ईश्वरीय एकता का ध्वज फहराया गया है, और हर तरफ आभा साम्राज्य का स्वर माधुर्य लहराया गया है। उच्च शिखर के सहचरों का पवित्र स्वर्गदूत "या बहा–उल–आभा!" का उद्घोष विश्व के हृदय केंद्र में कर रहा है, और ईश्वर के शब्द की शक्ति, अस्तित्व के शरीर में सच्चे जीवन की श्वास दे रही है।
>
> अतः, हे निष्ठावान मित्रों, यह तुम्हारे लिए उचित है कि अब्दुल–बहा के साथ आत्म बलिदान तथा ईश्वर के धर्म की सेवा में दिव्य दहलीज के प्रति दासता में शामिल हो। यदि इस प्रकार की सर्वोच्च वदान्यता को प्राप्त करने में तुम्हारी सहायता हो, तो पूरा विश्व जल्द ही ईश्वर के दैदीप्यमान वैभव का प्राप्तकर्ता बना दिया जाएगा, और मानवता की एकता की लालसा, विश्व के हृदय केंद्र में परम सौन्दर्य और आकर्षण में प्रकट होगी। यह अब्दुल–बहा की सर्वाधिक प्रिय इच्छा है! जो निष्ठावान हैं उनकी यह महानतम उत्कंठा है! महिमाओं की महिमा तुम पर टिकी है।